इकाई-II

5. चिट्ठियों की अनूठी दुनिया

-अरविंद कुमार सिंह

प्रस्तावना प्रसंग–

पक्षी और बादल,
ये भगवान के डाकिये हैं,
जो एक महादेश से
दूसरे महादेश को जाते हैं।
हम तो समझ नहीं पाते हैं
मगर उनकी लाई चिट्ठियाँ
पेड़, पौधे, पानी, पहाड़
बाँचते हैं।

–रामधारी सिंह 'दिनकर'

प्रश्न

1. कवि ने पक्षी और बादल को 'भगवान के डाकिये' क्यों कहा है?
2. पक्षी और बादल द्वारा लाई गई चिट्ठियों को कौन-कौन पढ़ पाते हैं?
3. हमारे जीवन में चिट्ठियों का क्या महत्व है?

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

पत्रों की दुनिया भी अजीबो-गरीब है और उसकी उपयोगिता हमेशा से बनी रही है। पत्र जो काम कर सकते हैं, वह संचार का आधुनिकतम साधन नहीं कर सकता है। पत्र जैसा संतोष फोन या एसएमएस का संदेश कहाँ दे सकता है। पत्र एक नया सिलसिला शुरू करते हैं और राजनीति, साहित्य तथा कला के क्षेत्रों में तमाम विवाद और नयी घटनाओं की जड़ भी पत्र ही होते हैं। दुनिया का तमाम साहित्य पत्रों पर केंद्रित है और मानव सभ्यता के विकास में इन पत्रों ने अनूठी भूमिका निभायी है। पत्रों का भाव सब जगह एक-सा है, भले ही उसका नाम अलग-अलग हो। पत्र को उर्दू में खत, संस्कृत में पत्र, कन्नड़ में कागद, तेलुगु में उत्तरम्, जाबू और लेख तथा तमिल में कडिद कहा जाता है। पत्र यादों को सहेजकर रखते हैं, इसमें किसी को कोई संदेह नहीं है। हर एक की अपनी पत्र लेखन कला है और हर एक के पत्रों का अपना दायरा। दुनिया भर में रोज़ करोड़ों पत्र एक दूसरे को तलाशते तमाम ठिकानों तक पहुँचते हैं। भारत में ही रोज़ साढ़े चार करोड़ चिट्ठियाँ डाक में डाली जाती हैं जो साबित करती हैं कि पत्र कितनी अहमियत रखते हैं।

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने सन् 1953 में सही ही कहा था कि- ''हज़ारों सालों तक संचार का साधन केवल हरकारे (रनर्स) या फिर तेज घोड़े रहे हैं। उसके बाद पहिए आए। पर रेलवे और तार से भारी बदलाव आया। तार ने रेलों से भी तेज़ गति से संवाद पहुँचाने का सिलसिला शुरू किया। अब टेलीफोन, वायरलैस और आगे रेडार-दुनिया बदल रहा है।''

पिछली शताब्दी में पत्र लेखन ने एक कला का रूप ले लिया। डाक व्यवस्था के सुधार के साथ पत्रों को सही दिशा देने के लिए विशेष प्रयास किए गए। पत्र संस्कृति विकसित करने के लिए स्कूली पाठ्यक्रमों में पत्र लेखन का विषय भी शामिल किया गया। भारत ही नहीं दुनिया के कई देशों में ये प्रयास चले और विश्व डाक संघ ने अपनी ओर से 16 वर्ष से कम आयुवर्ग के बच्चों के लिए पत्र लेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित करने का सिलसिला सन् 1972 से शुरू किया गया। यह सही है कि खास तौर पर बड़े शहरों और महानगरों में संचार साधनों के तेज़ विकास तथा अन्य कारणों

©CERT TELANGANA

से पत्रों की आवाजाही प्रभावित हुई है पर देहाती दुनिया आज भी चिट्ठियों से ही चल रही है। फैक्स, ई-मेल, टेलीफोन तथा मोबाइल ने चिट्ठियों की तेज़ी को रोका है पर व्यापारिक डाक की संख्या लगातार बढ़ रही है।

जहाँ तक पत्रों का सवाल है, अगर आप बारीकी से उसकी तह में जाएँ तो आपको ऐसा कोई नहीं मिलेगा जिसने कभी किसी को पत्र न लिखा या न लिखाया हो या पत्रों का बेसब्री से जिसने इंतज़ार न किया हो। हमारे सैनिक तो पत्रों का जिस उत्सुकता से इंतज़ार करते हैं, उसकी कोई मिसाल ही नहीं। एक दौर था जब लोग पत्रों का महीनों इंतज़ार करते थे पर अब वह बात नहीं। परिवहन साधनों के विकास ने दूरी बहुत घटा दी है। पहले लोगों के लिए संचार का इकलौता साधन चिट्ठी ही थी पर आज और भी साधन विकसित हो चुके हैं।

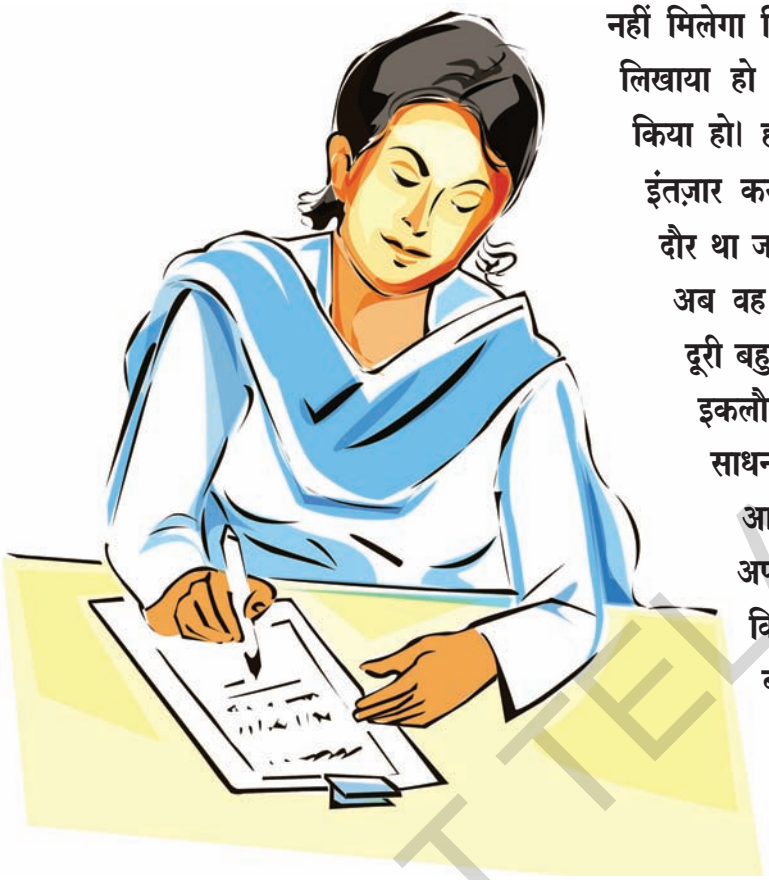

आज देश में ऐसे लोगों की कमी नहीं हैं जो अपने पुरखों की चिट्ठियों को सहेज और सँजोकर विरासत के रूप में रखे हुए हों या फिर बड़े-बड़े लेखक, पत्रकारों, उद्यमी, कवि, प्रशासक, संन्यासी या किसान, इनकी पत्र रचनाएँ अपने आप में अनुसंधान का विषय हैं। अगर आज जैसे संचार साधन होते तो पंडित नेहरू अपनी पुत्री इंदिरा गांधी को फ़ोन करते, पर तब 'पिता के पत्र पुत्री के नाम' नहीं लिखे जाते जो देश के करोड़ों लोगों को प्रेरणा देते हैं। पत्रों को तो आप सहेज कर रख लेते हैं पर एस.एम.एस संदेशों को आप जल्दी ही भूल जाते हैं। कितने संदेशों को आप सहेज कर रख सकते हैं? तमाम महान हस्तियों की तो सबसे बड़ी यादगार या धरोहर उनके द्वारा लिखे गए पत्र ही हैं। भारत में इस श्रेणी में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को सबसे आगे रखा जा सकता है। दुनिया के तमाम संग्रहालय जानी मानी हस्तियों के पत्रों का अनूठा संकलन भी है। तमाम पत्र देश, काल और समाज को जानने-समझने का असली पैमाना है। भारत में आज़ादी के पहले महासंग्राम के दिनों में जो कुछ अंग्रेज़ अफ़सरों ने अपने परिवारजनों को पत्र में लिखे वे आगे चल कर बहुत महत्व की पुस्तक तक बन गए। इन पत्रों ने साबित किया कि यह संग्राम कितनी ज़मीनी मज़बूती लिए हुए था।

महात्मा गांधी के पास दुनिया भर से तमाम पत्र केवल महात्मा गांधी-इंडिया लिखे आते थे और वे जहाँ भी रहते थे वहाँ तक पहुँच जाते थे। आज़ादी के आंदोलन की कई अन्य दिग्गज हस्तियों के साथ

SCERT TELANGANA

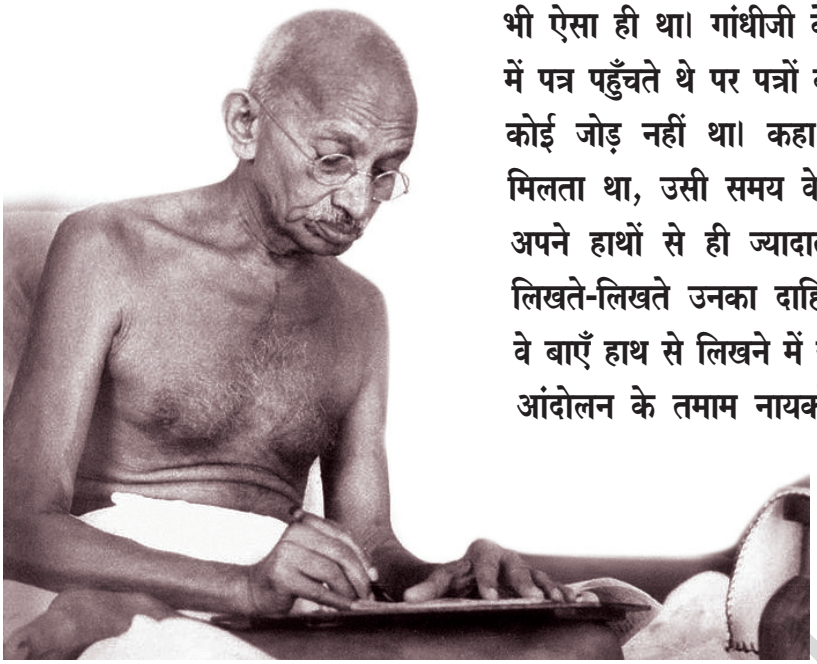

भी ऐसा ही था। गांधीजी के पास देश-दुनिया से बड़ी संख्या में पत्र पहुँचते थे पर पत्रों का जवाब देने के मामले में उनका कोई जोड़ नहीं था। कहा जाता है कि जैसे ही उन्हें पत्र मिलता था, उसी समय वे उसका जवाब भी लिख देते थे। अपने हाथों से ही ज्यादातर पत्रों का जवाब देते थे। जब लिखते-लिखते उनका दाहिना हाथ दर्द करने लगता था तो वे बाएँ हाथ से लिखने में जुट जाते थे। महात्मा गांधी ही नहीं आंदोलन के तमाम नायकों के पत्र गाँव-गाँव में मिल जाते हैं। पत्र भेजनेवाले लोग उन पत्रों को किसी प्रशस्तिपत्र से कम नहीं मानते हैं और कई लोगों ने तो उन पत्रों को फ्रेम कराकर रख लिया है। यह है पत्रों का जादू। यही नहीं, पत्रों के आधार पर ही कई भाषाओं में जाने कितनी किताबें लिखी जा चुकी हैं।

वास्तव में पत्र किसी दस्तावेज़ से कम नहीं है। 'पंत के दो सौ पत्र बच्चन के नाम' और निराला के पत्र 'हम को लिख्यौ है कहा' तथा 'पत्रों के आईने में दयानंद सरस्वती' समेत कई पुस्तकें आपको मिल जाएँगी। कहा जाता है कि प्रेमचंद खास तौर पर नए लेखकों को बहुत प्रेरक जवाब देते थे तथा पत्रों के जवाब में वे मुस्तैद रहते थे। इसी प्रकार नेहरू और गांधी के लिखे गए रवींद्रनाथ टैगोर के पत्र भी बहुत प्रेरक हैं। 'महात्मा और कवि' के नाम से महात्मा गांधी और रवींद्रनाथ टैगोर के बीच सन् 1915 से 1941 के बीच के पत्राचार का संग्रह प्रकाशित हुआ है जिसमें बहुत से नए तथ्यों और उनकी मनोदशा का लेखा-जोखा मिलता है।

पत्र व्यवहार की परंपरा भारत में बहुत पुरानी है। पर इसका असली विकास आज़ादी के बाद ही हुआ है। तमाम सरकारी विभागों की तुलना में सबसे ज़्यादा गुडविल डाक विभाग की ही है। इसकी खास वजह यह भी है कि यह लोगों को जोड़ने का काम करता है। घर-घर तक इसकी पहुँच है। संचार के तमाम उन्नत साधनों के बाद भी चिट्ठी-पत्री की हैसियत बरकरार है। शहरी इलाकों में आलीशान हवेलियाँ हों या फिर झोपड़पट्टियों में रह रहे लोग, दुर्गम जंगलों से घिरे गाँव हों या फिर बर्फबारी के बीच जी रहे पहाड़ों के लोग, समुद्र तट पर रह रहे मछुआरे हों या फिर रेगिस्तान की ढाँणियों में रह रहे लोग, आज भी खतों का ही सबसे अधिक बेसब्री से इंतज़ार होता है। एक दो नहीं करोड़ों लोग खतो और अन्य सेवाओं के लिए रोज भारतीय डाकघरों के दरवाज़ों तक पहुँचते हैं और इसकी बहुआयामी भूमिका नज़र आ रही है। दूर देहात में लाखों गरीब घरों में चूल्हे मनीआर्डर अर्थव्यवस्था से ही जलते हैं। गाँवों या गरीब बस्तियों में चिट्ठी या मनीआर्डर लेकर पहुँचनेवाला डाकिया देवदूत के रूप में देखा जाता है।

SCERT TELANGANA

प्रश्न-अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. पत्र जैसा संतोष फोन या एस.एम.एस. का संदेश क्यों नहीं दे सकता? चर्चा कीजिए।
2. पत्र धरोहर हो सकते हैं लेकिन एस.एम.एस. क्यों नहीं? तर्क सहित विचार व्यक्त कीजिए।
3. आज देश में ऐसे लोगों की कमी नहीं है, जो अपने पुरखों की चिट्ठियों को सहेज और सँजोकर विरासत के रूप में रखे हुए हैं। इन लोगों ने इन्हें सँजोकर क्यों रखा होगा? चर्चा कीजिए।

पढ़िए

1. पत्र को खत, कागद, उत्तरम्, जाबू, लेख, कडिद, पाती, चिट्ठी इत्यादि कहा जाता है। इन शब्दों से संबंधित भाषाओं के नाम पाठ पढ़कर बताइए।
2. पत्र लेखन की कला के विकास के लिए क्या-क्या प्रयास हुए?
3. लेखक ने डाकिये की तुलना देवदूत से क्यों की है?

लिखिए

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. किसी के लिए बिना टिकट सादे लिफ़ाफ़े पर सही पता लिखकर, पत्र बैरंग भेजने पर कौनसी कठिनाइयाँ आ सकती हैं? पता कीजिए।
2. क्या चिट्ठियों की जगह कभी फैक्स, ई-मेल, टेलीफोन तथा मोबाइल ले सकते हैं? कारण सहित लिखिए।
3. पत्र लेखनकला के विकास में किस प्रकार सहायक हैं?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. पत्र एक नया सिलसिला शुरू करते हैं और राजनीति, साहित्य तथा कला के क्षेत्रों में तमाम विवाद और नयी घटनाओं की जड़ भी पत्र ही होते हैं। इससे आप कहाँ तक सहमत हैं। इसके आधार पर आज के समाज में पत्रों के महत्व पर अपने विचार लिखिए।
2. संचार के क्षेत्र में तकनीकी योगदान पर प्रकाश डालिए।

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

शब्द भंडार

1. "पत्रों की दुनिया अजीबो-गरीब है।", "इन पत्रों ने अनूठी भूमिका निभाई है।", यहाँ 'अजीबो-गरीब' और 'अनूठी' शब्द का प्रयोग विचित्र के अर्थ में हुआ है। आप इसके इन समानार्थी शब्दों का प्रयोग अपने वाक्यों में कीजिए।

   न्यारा, अनोखा, अद्‌भुत, अनुपम, निराला, विलक्षण

2. "पत्रों का भाव सब जगह एक सा है।" यहाँ भाव शब्द का तात्पर्य है- अर्थ। अब नीचे दिये गये वाक्य पढ़िए और भाव का अलग अर्थ में प्रयोग समझिए।

   1. आज टमाटर का भाव बहुत अधिक है। (यहाँ भाव का अर्थ कीमत है।)
   2. मेरे कहने का भाव समझो। (यहाँ भाव का अर्थ है- अभिप्राय)
   3. अब अधिक भाव मत खाओ। (यहाँ भाव शब्द का मुहावरेदार प्रयोग है।)

   इन तीनों संदर्भों में भाव शब्द का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

भाषा की बात

1. किसी प्रयोजन विशेष से संबंधित शब्दों के साथ शब्द जोड़ने से कुछ नये शब्द बनते हैं, जैसे- प्रशस्ति पत्र, समाचार पत्र। आप भी पत्र के योग से बननेवाले दस शब्द लिखिए।
2. 'व्यापारिक' शब्द 'व्यापार' के साथ 'इक' प्रत्यय के योग से बना है। 'इक' प्रत्यय के योग से बननेवाले शब्दों को पाठ्यपुस्तक में खोजकर लिखिए।
3. दो स्वरों के मेल से होनेवाले परिवर्तन को स्वर संधि कहते हैं; जैसे- रवींद्र = रवि + इंद्र। इस संधि में इ + इ = ई हुई है। इसे दीर्घ संधि कहते हैं। दीर्घ स्वर संधि के और उदाहरण खोजकर लिखिए। ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, के बाद ह्रस्व या दीर्घ आ, ई, ऊ हो जाता है, इसी कारण इस संधि को दीर्घ संधि कहते हैं; जैसे- संग्रह + आलय = संग्रहालय, महा + आत्मा = महात्मा। इस प्रकार के कम से कम दस उदाहरण खोजकर लिखिए।

दो स्वरों के बीच विकार हो तो स्वर संधि कहते हैं। स्वर संधि के प्रकार -

1. **दीर्घ संधि**	**जैसे-**	**पुस्तक + आलय = पुस्तकालय, कवि + इंद्र = कवींद्र, गुरु + उपदेश = गुरूपदेश,**
2. **गुण संधि**	**जैसे-**	**महा + ईश्वर = महेश्वर, पर + उपकार = परोपकार, महा + ऋषि = महर्षि,**
3. **वृद्‌धि संधि**	**जैसे-**	**एक + एक = एकैक, सुंदर + ओदन = सुंदरौदन महा + औषधि = महौषधि**

SCERT TELANGANA

4. **यण संधि**	**जैसे-**	**प्रति + अक्ष = प्रत्यक्ष, सु +आगत = स्वागत** **मातृ + अनुमति = मात्रनुमति**
5. **अयादि संधि**	**जैसे-**	**ने + अन = नयन,** **भो + अन = भवन**

प्रशंसा

गाँवों या गरीब बस्तियों में चिट्ठी या मनीआर्डर लेकर पहुँचने वाला डाकिया देवदूत के रूप में देखा जाता है। बारिश, सर्दी और गर्मी चाहे कितना भी कष्ट हो डाकिया हमारे घर पहुँच जाता है। हमारे जीवन में डाकिये की भूमिका महत्वपूर्ण है। डाकिये की ईमानदारी और कर्मठता की प्रशंसा करते हुए दस वाक्य लिखिए।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

किन्हीं दो त्यौहारों पर अपने मित्रों को बधाई देने के लिए एस.एम.एस. तैयार कीजिए।

परियोजना कार्य

आप अपने मित्रों को संपर्क में रखने के लिए क्या उपाय करना चाहेंगे? अपने मित्रों से चर्चा करते हुए योजना तैयार कीजिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता/सकती हूँ।		
4. संदेशों का महत्व व संचार साधनों के बारे में बता सकता/सकती हूँ।		
5. पत्र, एस.एम.एस आदि तैयार कर सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21